प्राक्कथन

लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था में स्थानीय संस्थाओं का काफी महत्व है। ये संस्थाएँ लोकतन्त्र की जडों को गहरा बनाती हैं तथा नागरिकों में राजनीतिक जागरूकता उत्पन्न करती हैं। जितनी अधिक क्रियाशील ये संस्थाऐं होंगी स्थानीय जीवन उतना ही सुखी एवं सम्पन्न होगा। अतः इन संस्थाओं को लोकतन्त्र की पाठशाला, प्रयोगशाला एवं आधारशिला कहा जाता है। भारत में स्थानीय स्वशासन संस्थाएँ प्राचीनकाल से ही विद्यमान रही है। महाभारत, मनुस्मृति आदि में इनका उल्लेख मिलता है। विद्वनों का मत है कि यद्यपि ये संस्थाएँ भारत में प्राचीनकाल से लेकर आज तक किसी न किसी रूप में विद्यमान रही हैं तथा संगठन और कार्यप्रणाली की दृष्टि से इनका व्यवस्थित प्रादुर्भाव ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत ही हुआ था। भारत में स्थानीय शासन को दो क्षेत्रों यथा ग्रामीण एवं नगरीय में विभाजित किया गया है। 73वें एवं 74वें संविधान संशोधन के माध्यम से इन संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध "**नगरीय स्थानीय स्वशासन निकायों में निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की राजनीतिक सहभागिता : हरियाणा राज्य के कुरूक्षेत्र जिले के संदर्भ में एक अध्ययन**" के अन्तर्गत हरियाणा राज्य के कुरूक्षेत्र जिले की निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की राजनीतिक जागरूकता ,सहभागिता से सम्बन्धित समस्याएँ एवं सुधार हेतु अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। शोध विषय के समग्र अध्ययन की सुविधा एवं शोध के उद्देश्य की सम्पूर्ति हेतु प्रदत शोध प्रबन्ध को छः अध्यायों में विभाजित कर उनका विवेचन किया गया है। साथ ही शोध के दौरान अनुभूत समस्याओं के समाधान हेतु सुझावों का प्रस्तुतीकरण भी किया गया है।

मैं सर्वप्रथम भगवान का तहे दिल से शुक्रिया करती हूँ जिनकी असीम कृपा से इस शोध प्रबन्ध का कार्य संभव हो सका।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध को पूर्ण करने में मैं अपनी शोध निर्देशिका एवं मार्गदर्शिका **डॉ. रूपाली भौरोदिया** के प्रति हदय से आभारी हूँ जिसके सतत् निर्देशन, उत्साहवर्धक

विचार–विमर्श, अमूल्य सुझावों व अथक प्रयासों के फलस्वरूप ही मैं इस अध्ययन को यथा समय पूरा कर सकी हूँ।

मैं वनस्थली विद्यापीठ के कुलपति महोदय **प्रो. आदित्य शास्त्री** तथा सामाजिक विज्ञान संकाय विभाग के **डॉ. सिद्धार्थ शास्त्री (डीन)** और **प्रो.निर्मला सिहं (विभागाध्यक्ष)** के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ। जिन्होंने मुझे विद्यापीठ में उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अवसर प्रदान किया।

मैं आदरणीय **डॉ. संगीता विजय** और **डॉ. सुनील महावर** अभारी हूँ ,जिन्होनें मुझे समय–समय पर प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन दिया।

मैं हृदय से मेरी परमपूज्य माता **श्रीमती दीपक कटारिया** एवं पिता **श्री नरेश कुमार कटारिया** की भी आभारी हूँ ,जिनके वात्सल्यपूर्ण स्नेह व शुभाशीर्वाद से **मैं** यह कार्य करने में सक्षम हो सकी और जिन्होंने मेरी तत्कालीन समस्याओं का हल सुझाकर मुझे सम्बल प्रदान किया। मैं हृदय से अपने पति **श्री अनूप कुमार भोला** की आभारी हूँ जिन्होनें मुझे समय–समय पर प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन दिया।

शोध अध्ययन की पूर्णता में कुरुक्षेत्र जिले की नगरपालिकाओं के उन सभी सदस्यों को भी धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने मुझे अपने व्यस्त कार्यक्रम में से समय निकालकर उपयुक्त जानकारी प्रदान करने का कष्ट किया। जिसके आभाव में इस अध्ययन की पूर्णता असंभव थी।

मैं वनस्थली विद्यापीठ के केन्द्रीय पुस्तकालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ।

दिनांक : **दीक्षा**

अनुक्रमणिका

अध्याय प्रथम : पृष्ठ संख्या

- शोध प्ररचना 1–26

अध्याय द्वितीय :

- भारत में नगरीय स्थानीय स्वशासन का उद्‌भव एवं विकास 27–52

अध्याय तृतीय :

- अध्ययन क्षेत्र का परिचय 53–67

अध्याय चतुर्थ :

- नगरीय स्थानीय स्वशासन निकायों में महिला प्रतिनिधियों की सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि व राजनीतिक चेतना एवं जागरूकता का विश्लेषण 68–101

अध्याय पंचम :

- नगरीय स्थानीय स्वशासन निकायों में महिला प्रतिनिधियों की राजनीतिक सहभागिता का विश्लेषण 102–132

अध्याय षष्ठम् :

- निष्कर्ष, समस्याएँ एवं सुझाव 133–152

परिशिष्ठ :

- संदर्भ ग्रन्थ सूची I-X
- अनुसूची XI-XVIII